मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता।

दुनियां के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है।

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 37 | जुलाई 1991 | 50 पैसे

मजदूर आन्दोलन और मैनेजमेन्ट का स्वरूप

डाला में मजदूरों का खून बहा

उत्तर प्रदेश में बनारस के नजदीक डाला सीमेंट फैक्ट्री के आन्दोलन कर रहे पांच हजार मजदूरों पर 2 जून को पुलिस ने गोलियां चलाई। पुलिस गोलीबारी में सरकार के मुताबिक 9 और गैर-सरकारी सूत्रों के अनुसार 40 मजदूर मारे गये। गोलियों की बौछार के बाद सरकार ने इलाके में कर्फ्यू लगा दिया। डाला सीमेंट फैक्ट्री के मजदूरों पर हमले के खिलाफ दो जून को ही रात को ओबरा बिजली घर के सात हजार मजदूरों ने चौबीसघंटे हड़ताल कर दी।

18 वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश सरकार ने डाला, चुर्क और चुनार में तीन सीमेन्ट फैक्ट्रियां स्थापित की। पूंजीवादी व्यवस्था के आम संकट और सरकारी साहबों द्वारा करोड़ों की हेरा-फेरी की वजह से शीघ्र ही यह कारखाने बीमार हो गए। कुछ वर्षों से इन कारखानों से उत्तर प्रदेश सरकार को हर साल तीस-चालीस करोड़ रुपयों का घाटा होता रहा है।

जनता दल सरकार ने घाटे में चल रही सरकारी फैक्ट्रियों को बेचने का फैसला किया प्रताप लेलैन्ड ट्रैक्टर फैक्ट्री बेच दी गई। .....सीमेंट फैक्ट्रियों को खरीदने के लिए डालमिया ग्रुप और इन फैक्ट्रियों के अफसरों की एसोसिएशन दावेदारों में थे, बाजी डालमिया ग्रुप ने मारी। पिछले साल इन फैक्ट्रियों को जब बेचा गया उस समय मुख्य मन्त्री मुलायमसिंह सी पी आई - सी पी एम की आंखों के तारे थे।

अक्टूबर 90 से डालमिया ग्रुप सीमेंट फैक्ट्रियों का कब्जा लेने की कोशिश कर रहा था। सरकारी साहबों वाली मैनेजमेन्ट अपने कब्जे बरकरार रखने के लिए हाथ-पैर मार रही थी और इधर साहब लोगों ने लूट-पाट भी तेज कर दी थी। इस खींच-तान में डालमिया ग्रुप ने मुलायम सिंह सरकार के रहते कब्जा हासिल करने के लिए जोर मारा और साहब लोगों ने मजदूरों को भड़का दिया। पूंजीवादी गिरोहों की इस उठा-पटक में डाला सीमेंट फैक्ट्री के मजदूर 2 जून को पुलिस फायरिंग में बली के बकरे बने।

पुलिस की बर्बरता, डाला सीमेन्ट फैक्ट्री मजदूरों की बहादुरी, ओबरा थर्मल मजदूरों द्वारा प्रदर्शित मजदूर एकता की शानदार मिशाल, पूंजीवादी गिरोहों की छीना-झपटी में शतरंजी चालें, मजदूरों का भोलापन वाले इस घटनाक्रम में **मजदूर आन्दोलन के लिए असल महत्व का सवाल मैनेजमेन्टों के स्वरूप के प्रति मजदूरों के रुख का प्रश्न है।** आइये मामले को कुछ निकट से देखें।

अस्सी-नब्बे साल से पूंजीवादी व्यवस्था अपनी मरणासन्न-पतनशील अवस्था में है। मजदूर लगाकर मण्डी के लिए प्रोडक्शन वाली इस व्यवस्था ने इस दौरान दो विश्व युद्धों और सैकड़ों लोकल युद्धों में दसियों करोड़ लोगों को कत्ल किया है। मानव द्वारा प्रत्येक मानव को रोटी-कपड़ा-मकान की समुचित व्यवस्था करने की क्षमता हासिल करने के बावजूद बिक्री के लिए प्रोडक्शन वाली इस व्यवस्था में अरबों मनुष्य भूखे-नंगे-बेघरबार हैं। यह है वह बुनियादी हकीकत जिसके आधार पर हर सवाल को समझने—उससे निपटने की कोशिश आज मनुष्यों के लिए बुनियादी महत्व की है।

पूंजीवादी व्यवस्था के इस दौर के संकटों से पार पाने के लिए, पूंजीवादी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पूंजी के नुमाइन्दों ने टोटकों का सहारा लिया है। खून-खराबा और मजदूरों की बढ़ती बदहाली के साथ-साथ पूंजीवादी व्यवस्था के संकटों का गहराते जाना इन पूंजीवादी टोटकों का रिजल्ट है, अनिवार्य नतीजा है। कभी पूंजीवादी जनतन्त्र तो कभी हिटलरी राज [समाजवाद के लेबल के साथ या उसके बिना] ऐसे ही टोटके हैं। पूंजीवादी जनतन्त्र को जनतन्त्र कहना, यहां इसे भारतीय जनतन्त्र कहना तो खैर .....

(शेष अगले पेज पर)

बिचौलियों की करतूतें

स्टेरीवेयर में फर्जी हड़ताल

प्लाट नं० 16—17 सैक्टर 24 में स्टेरीवेयर व स्टेरीप्लेट में 400 परमानेन्ट और 400 कैजुअल वर्कर काम करते थे। 25 सैक्टर में इसकी शाखा में 150 कैजुअल वर्कर काम करते थे। यह कम्पनी मुख्यत: केल्विनेटर को पार्ट्स सप्लाई करती है।

21 मई को केल्विनेटर में तालाबन्दी हुई और 24 मई को स्टेरीवेयर मैनेजमेन्ट ने सब कैजुअल वर्करों को नौकरी से निकाल दिया। 26 मई को मैनेजमेन्ट ने तीन की जगह एक शिफ्ट शुरू करवाई। केल्विनेटर में तालाबन्दी जारी .... स्टेरीवेयर के परमानेन्ट मजदूर ठाली। बैठों को तनखा देनी पड़ेगी ! — स्टेरीवेयर मैनेजमेन्ट ने बिचौलियों को हरकत में आने को कहा। स्टेरीवेयर में एटक की यूनियन है।

एटक लीडरों के लगुओं-भगुओं ने बरदी-जूते-एरियल के लिए शोर मचाना शुरू कर दिया। 16 जून को एटक लीडरों ने स्टेरीवेयर मैनेजमेंट को अल्टीमेटम दिया कि 18 जून को दोपहर 12 बजे तक मैनेजमेंट जूते-वरदी एरियल नहीं देगी तो हड़ताल कर दी जायेगी ! और 18 जून को 12 बजे से एटक ने स्टेरीवेयर में हड़ताल कर दी !! एटक की यह हड़ताल फर्जी हड़ताल का एक नुमाइश लायक नमूना है।

एटकी बिचौलियों ने स्टेरीवेयर मैनेजमेन्ट को ले—ऑफ आदि के झंझट से तो बचाया ही है, इन बदमाशों ने मजदूरों की कीमत पर मैनेजमेन्ट को पैसों की बचत भी खूब करवाई है। जाहिर है कि ऐसी नंगई के लिए मैनेजमेन्ट ने एटक लीडरों की जेबें भरी हैं। नये जूतों का इन्तजार करने के बजाय पुराने जूतों को भिगोकर उनसे एटक लीडरों का स्वागत अगर स्टेरीवेयर के मजदूर अभी नहीं करेंगे तो यह बदमाश उन्हें आगे और भी ज्यादा दुख देंगे।

2. यूनिवर्सल इन्जीनियरिंग में धोखाधड़ी

मथुरा रोड़ स्थित यूनिवर्सल फौज के लिए बमों के फ्यूज आदि बनाती है। मौत का सामान बनाने वाली कम्पनियों की बढ़ती संख्या और उनकी होड़ ने 400 परमानेन्ट व 400 कैजुअल वर्कर रखने तथा लगातार ओवरटाइम व इन्सैनटिव वाली यूनिवर्सल कम्पनी की हालत खस्ता कर दी। 1990 में 400 कैजुअलों को नौकरी से निकाल दिया गया। ओवरटाइम व इनसैनटिव बन्द कर दिया गया। नया तेज-तर्रार मैनेजर लाया गया। फिर भी अगस्त 90 आते-आते मजदूर ड्यूटी के दौरान खाली बैठने लगे। एक छुट-पुट झगड़े की आड़ में मैनेजमेन्ट ने कुछ दिन तालाबन्दी भी की। लेकिन हालात मैनेजमेन्ट के काबू में नहीं आये।

इस साल मैनेजमेन्ट ने अपने संकट से पार पाने के लिए परमानेन्ट मजदूरों को बलि के बकरे बनाने की योजना बनाई। यूनिवर्सल में सीटू की यूनियन है। गेडोर की ही तरह यहां भी मैनेजमेन्ट ने मजदूरों की चमड़ी उतारने की योजना फैक्ट्री में सीटू लीडरों के जरिए मजदूरों के सामने रखी। गेडोर की ही तरह यूनिवर्सल के मजदूरों ने बिचौलियों के जरिए रखे गए मैनेजमेन्ट के प्रस्तावों को ठुकरा दिया। 400 मजदूरों ने सीटू लीडरों को दो टूक बता दिया कि वे जो कुछ भी होगा उसको इक्कठे भुगतेंगे। छोटे सीटू लीडरों की दाल नहीं गलती देखकर यूनिवर्सल मैनेजमेन्ट ने फरीदाबाद सीटू के लीडरों को पूजा। इन बदमाशों ने यूनिवर्सल मजदूरों को संघर्ष के पथ से डिगाने के लिए बहुत पापड़ बेले। तालाबन्दी-क्लोजर का डर मजदूरों को दिखाया झूठे आश्वासन दिए। और आखिर में 400 में से 197 मजदूरों को यूनिवर्सल मैनेजमेन्ट की धार पर धरवा ही दिया।

बिचौलिए इन्टक के हों, एच एम एस वाले हों चाहे सीटू वाले, बिचौलियों को ठोकर मार कर ही मजदूर अपने हितों की देख-भाल कर सकेंगे।

—X—

हमारे लक्ष्य हैं:— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुंचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना। 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिये काम करना। 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है। बातचीत के लिये बेझिझक मिलें। टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे।

संपर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद 121001

मार्क्सवाद
(बारहवीं किस्त)

दसवीं और ग्यारहवीं किस्तों में हमने स्वामी समाज में सामुदायिक सम्पत्ति के स्थान पर निजी सम्पत्ति के विकसित होने और स्त्रियों की सामाजिक पोजीशन के लगातार गिरने की भौतिकवादी व्याख्या की कोशिश की। चलते-चलते यहाँ हम बहुत ही संक्षेप में स्वामी समाज में हुए उन उल्लेखनीय परिवर्तनों द्वारा संस्थागत रूप लेने की चर्चा करेंगे।

स्वामी समाज में गण की सम्पत्ति, सामुदायिक सम्पत्ति के स्थान पर निजी सम्पत्ति, स्वामियों की अलग-अलग सम्पत्ति विकसित हुई। इस पर निजी सम्पत्ति की पवित्रता, उसकी अनुलंघनियता आदि के फतवे देने वाले नये शास्त्र रचे गए। निजी सम्पत्ति के गुणगान में ऋषि महर्षियों ने पोथी पत्रों के ढेर लगा दिए। निजी सम्पत्ति के मालिक अमीर स्वामियों के गुणगान से पुराण-उपनिषद् बौद्ध-जैन ग्रन्थ भरे पड़े हैं। गरीब स्वामियों के अपमानित किये जाने के किस्से भी शास्त्रों में बड़ी संख्या में पाये जाते हैं।

स्वामियों में निजी सम्पत्ति की मात्रा सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदण्ड बनी। निजी सम्पत्ति की सुरक्षा और वृद्धि के लिए नये विधि-विधान की रचना हुई।

स्वामियों में अमीर और गरीब स्वामी बनने पर दासों के दमन-शोषण के लिए बने संस्थागत ढाँचे में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। दासों को पालतु जानवर बनाने तथा उन्हें हांकने-दबाने का काम करने वाले पुराने—नये शास्त्रों और शस्त्रों ने अब गरीब स्वामियों को भी अपनी चपेट में ले लिया न्यायालय-जेल-कोतवाल-पुलिस-सेना संस्थागत रूप धारण करने लगे। अमीर स्वामी इनका इस्तेमाल गरीब स्वामियों के खिलाफ भी करने लगे। राज्यतन्त्र ठोस आकार ग्रहण करने लगा।

इसी प्रकार रीति-रिवाज, परम्परा के रूप में शास्त्रों ने स्त्रियों की गुलामी को संस्थागत रूप दिया। और शस्त्रों ने नागरिकों के खिलाफ सामाजिक दण्ड का रूप अख्तियार किया।

अगले अंक में हम सामन्ती समाज द्वारा स्वामी समाज को बेदखल करने की भौतिकवादी व्याख्या का प्रयास करेंगे। —ओ

-o- [जारी]

केल्विनेटर

मैनेजमेन्ट द्वारा 21 मई को की गई तालाबन्दी जुलाई के आरम्भ होने के समय जारी है।

मैनेजमेन्टों के तालाबन्दी के हथियार की काट के लिए मजदूरों द्वारा वे कदम उठाने जरूरी हैं जिनके जरिये लॉकआउट फैक्ट्री के मजदूर अपने साथ अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों को जोड़ सकें। मजदूरों की बड़ी तादाद में ही यह ताकत है कि पूंजीवादी तन्त्र के नाजुक अंगों पर चोट करके पूंजीवादी मोर्चे में दरार डाली जा सकती है और लॉकआउट करने वाली मैनेजमेन्ट को पीछे हटने को बाध्य किया जा सकता है। कानपुर की दस कपड़ा मिलों के पैंतीस हजार मजदूरों और उनके परिवारों व सहयोगियों ने फरवरी 89 में पांच दिन रेलवे लाइन जाम करके कपड़ा मिल मैनेजमेन्टों के एक बड़े हमले को फेल कर दिया था। लेकिन केल्विनेटर मजदूर बिचौलियों के जाल में उलझ गये।

मजदूरों ने जिस बिचौलिये को महाबलि समझा था उसकी नपुंसकता फैक्ट्री में लॉकआउट होते ही दिख गई पर केल्विनेटर मजदूर फिर भी आस लगाये रहे। पूंजीवादी कानून की सामान्य सी धारा 144 तोड़ने की हिम्मत भी बिचौलिये महाबलि की नहीं हुई और मजदूर आन्दोलन के लिहाज से बहुमूल्य दो हफ्ते गवा दिए गये। इसके बाद डी सी के आश्वासनों में उलझा कर बिचौलिए ने मजदूरों की अन्धी एकता को तो कुछ दिन और बनाए रखा पर केल्विनेटर मजदूरों के संघर्ष के ताकतवर बनने की सम्भावना पर पानी सा फेर दिया।

तालाबन्दी के दूसरे महीने में प्रवेश और अन्धी गली में फंस जाने के अहसास के साथ ही बिचौलिए को महाबलि मानने वाले केल्विनेटर मजदूरों में ही उसे गालियाँ देने वाले मजदूरों की संख्या बढ़ने लगी। अन्धी एकता के बिखरने के साथ बढ़ी हड़बड़ाहट ने मजदूरों को भौचक्का कर दिया है। इसने केल्विनेटर मैनेजमेन्ट के दलालों में नई जान डाल दी है। मजदूरों का एक उल्लेखनीय हिस्सा अब इन दलालों के चक्कर में आने लगा है। इससे बिचौलिए शरदार और दलालों के चक्करों में पड़े मजदूरों में बड़े पैमाने पर मार-पीट के हालात बनते जा रहे हैं। थॉमसन प्रेस में हाल ही में इसी प्रकार की मार-पीट से सबक ले कर केल्विनेटर मजदूर इससे बचें।

—o—

ओसवाल स्टील

प्लाट नं० 263 सैक्टर 24 स्थित इस मिनी स्टील प्लांट में अब लगभग आठ सौ मजदूर काम करते हैं—इनमें आधे के करीब परमानेन्ट हैं। ओसवाल स्टील में मजदूरों और मैनेजमेन्ट के बीच कई साल से लगातार खट-पट चल रही है। अब तक मजदूरों को लगातार पटखनी देने में मैनेजमेन्ट सफल रही है।

पिछले साल नई एग्रीमेंट के लिए दबाव डालने के वास्ते मजदूरों द्वारा जुलाई-अगस्त-सितम्बर में उठाये कदमों के खिलाफ मैनेजमेंट ने पहले तो तीस परसैन्ट तनखा काट ली और फिर अक्टूबर 90 में फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी थी। दो महीने तक चली उस लाकआउट को मैनेजमेंट ने मजदूरों द्वारा हड़ताल बताया और नवम्बर 90 में मजदूरों को झुक कर समझौता करने को मजबूर कर दिया।

इधर ओसवाल स्टील के मजदूरों ने फिर कमर कसी है। मार्च 91 में फैक्ट्री में एक नई भट्टी का निर्माण पूरा हुआ। इस भट्टी द्वारा पुरानी भट्टियों से प्रोडक्शन ज्यादा होता है लेकिन एक्सीडैन्ट का खतरा तथा मजदूरों पर वर्क लोड बढ़ जाते हैं। ओसवाल मजदूरों ने नई भट्टी पर काम करने के लिए अपनी कुछ डिमान्डें रखी पर मैनेजमेन्ट ने उन पर बात करने से इन्कार कर दिया और दबाव डालकर नई भट्टी पर काम करवाने की कोशिशें की। खींचा-तान शुरू हुई और इस सिलसिले में मई माह से मैनेजमेन्ट ने मजदूर सस्पैन्ड करने शुरू कर दिए।

फरनेस डिपार्ट के पचास मजदूरों को चार्जशीट सस्पैन्ड करने पर भी मजदूर जब नहीं झुके तब 24 जून को मेन्टेनेन्स के पचास बर्करों को छोड़ कर मैनेजमेन्ट ने फरनेस डिपार्टमेन्ट के बाकी बचे लगभग 250 मजदूरों का गेट रोक दिया। मजदूरों का गेट खुद मैनेजमेन्ट ने रोका है लेकिन एक बार फिर मैनेजमेन्ट कह रही है कि मजदूरों ने हड़ताल की है। ओसवाल स्टील की रोलिंग डिपार्टमेन्ट और वर्कशॉप में काम चल रहा है।

मैनेजमेन्ट ने अपना पुराने तरीके वाला हमला बोल दिया है और ओसवाल के मजदूर हैं कि पहले की ही तरह कागजी खानापूर्ति के सिवाय कोई कदम नहीं उठा रहे। मैनेजमेंट के ऐसे हमले पूर्व में सफल हुए हैं और मजदूरों के ऐसे बचाव के प्रयास बुरी तरह फेल हुए हैं।

लगातार हार के इस सिलसिले को तोड़ने के लिए ओसवाल स्टील के मजदूरों को अपनी ताकत बढ़ाने वाले कदमों पर विचार करना चाहिए। एक कदम के तौर पर हर रोज जलूस निकालने पर विचार करें। ओसवाल स्टील के मजदूरों से विचार-विमर्श का हम स्वागत करेंगे।

पहले पेज से क्रमशः .....

पूंजीवादी संकटों से रूबरू पूंजी के नुमाइन्दों द्वारा कभी सरकारीकरण तो कभी प्रायवेटकरण के कदम भी पूंजीवादी टोटकों की कैटेगरी में हैं। कुछ समय पहले तक दुनिया-भर में सरकारीकरण को पूंजीवादी संकटों की रामबाण दवा पेश किया जाता था। पुलिस फौज के एक क्रूरतन्त्र के स्थान पर उससे भी क्रूर पुलिस-फौज के तन्त्र को स्थापित करने के लक्ष्य वाले नकली कम्युनिस्ट इसके बड़-बोले वकील थे—वैसे, अमरीका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने 1929 की महामन्दी में इसी नुस्खे का इस्तेमाल किया था। राज्य पूंजीवाद को समाजवाद और सरकारी उद्योगों को सार्वजनिक उद्योग-पब्लिक सैक्टर कहने वाले बदमाशों व बेवकूफों को रूस-चीन आदि की हाल की घटनाओं ने हक्का-बक्का सा कर दिया है। इन हालत में प्रायवेटकरण को अचूक ताबीज बताने वाले प्रवचनों का आज बोलबाला हो गया है।

जगह कम है इसलिए यहाँ इतना ही कहेंगे कि **इंग्लैन्ड में प्रायवेटकरण-सरकारीकरण-प्रायवेटकरण का घनचक्कर एक चक्कर पूरा करके दूसरे में प्रवेश कर चुका हैं पर पूंजी के इस धड़ का संकट है कि गहराता ही जा रहा है। वास्तव में प्रायवेटकरण अथवा सरकारीकरण के सिलसिले द्वारा किसी देश में कार्यरत पूंजी इकाई द्वारा तत्काल राहत महसूस करना यानि पूंजीवादी होड़ में उस द्वारा कुछ दम—खम हासिल करना तभी हो पाता है जब इन कार्रवाइयों के दौरान वह मजदूरों की बड़े पैमाने पर छटनी, वर्कलोड में भारी बढ़ौतरी, तनखा में कटौती, सहुलियतों में कमी आदि के द्वारा अन्य देशों में कायरत पूंजी से कम लागत पर अधिक प्रोडक्शन हासिल कर पाती है। लेकिन चूंकि हर देश में पूंजी के नुमाइन्दे यही करने की कोशिशों में जुटे रहते हैं इसलिए जल्दी ही ऐसी राहत खत्म हो जाती है।**

पूंजीवादी व्यवस्था में मैनेजमेन्ट का काम है कम से कम लागत पर अधिक से अधिक प्रोडक्शन लेना। इसलिए मैनेजमेन्ट सरकारी साहबों की हो चाहे डालमिया ग्रुप की, वह मजदूरों को अधिकाधिक निचोड़ने का काम करेगी। कौन मजदूरों की चमड़ी उतारे यह चुनने के लिए परेशान होना मजदूरों का काम नहीं है। सरकारीकरण व प्रायवेटकरण की आड़ में मजदूरों पर होने वाले हमलों का मुकाबला कैसे किया जाये—मजदूर आन्दोलन के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न यह है।

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेरसिंह द्वारा आटापिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं. गां. मेमो. न. से मुद्रित